प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 20 अगस्त, 2016 को क्लीनिकल हिमैटोलॉजी विभाग के तत्वाधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का उद्घाटन डॉ0 वी0एन0त्रिपाठी,डी0जी0एम0ई0, ने प्रातः 11 बजे दीप जला कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा रक्त कैंसर के उपचार के लिए संसाधानों की कमी नहीं होने दी जायेगी। रक्त कैंसर तथा रक्त सम्बंधी रोगों का उपचार आधुनिक तकनीकि एवं विधियों से किया जा रहा है। तथा इस बात का प्रयास रहता है कि शोध के द्वारा प्राप्त किये गये नये उपायों को लागू किया जा सके। कार्यक्रम में प्रो0 आशुतोष कुमार, अधिष्ठाता पैरा मेडिकल संकाय सहित अन्य विभागों के विभागाध्यक्ष और चिकित्सा शिक्षक एवं छात्र–छात्रायें उपस्थित रहे।

सेमीनार के पहले सत्र में डॉ0 ए0के0त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष क्लीनिकल हिमैटोलॉजी विभाग, के0जी0एम0यू0 ने बताया कि क्रोनिक मायलॉइड ल्यूकीमिया एक ऐसा कैंसर है जिसका उपचार सम्भव है। रिसर्च के माध्यम से देखा गया हैं कि कई वर्षो तक दवा खाने के बाद मालीक्यूलर जांचों में रोग दिखाई नहीं पड़ता है और दवा भी बन्द की जा सकती है। लेकिन दवा बंद करनी है या नहीं इसका निर्णय डॉक्टर को ही लेना है।

इसी सत्र में दिल्ली के डॉ0 मनोरंजन महापात्रा ने इस रोग के उपचार के दौरान होने वाली विभिन्न जांचों की उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रकाश डाला।

डॉ0 सोनिया नित्यानंद ने बताया कि इस रोग के प्रारम्भिक उपचार के दौरान किस प्रकार दवाओं का चयन किया जाये इस पर प्रकाश डाला।

डॉ0 त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में मायलोडिस्प्लास्टिक सिन्ड्रोम पर चर्चा की गई। इस विषय पर बोलते हुए पी0जी0आई0 चंडीगढ़ से आयीं डॉ0 नीलम वर्मा ने इसके जांच, डायग्नोसिस तथा उपचार के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। डॉ0 शैलेन्द्र वर्मा ने कहा कि इस सेमिनार से रक्त कैंसर एवं रक्त सम्बंधी रोगों से जुड़े डॉक्टरों को नवीनतम जानकारी मिली।

स्टेट लेवल हिमैटोलॉजी क्विज में प्रदेश के विभिन्न मेडिकल कालेजों की कुल 10 टीमों में पी0जी0 स्टूडेन्ट ने हिस्सा लिया। इस क्विज में विजयी प्रथम तथा द्वितीय टीमों को जयपुर में होने वाली राष्ट्रीय स्तर की कान्फ्रेंस में सहभागिता करने का अधिकार मिलेगा। डॉ0 आशुतोष कुमार ने सेमिनार में आये अतिथियों एवं सहभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डॉ0 संजय मिश्रा डॉ0 मिली जैन ने सक्रिय रूप से भाग लिया।